पुस्तक प्राप्तिके स्थान—

१ शेठ नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड ऑफीस ठि० गोपीपुरा-जुनी अदालत आनंद भुवन मकान मु० सुरत. (गुजरात) B B & C. I R.

२ बाबूजी कीर्तिप्रसादजी जैन B A. A L L. B. एडवोकेट हाइकोर्ट. मु० बीनौली, स्टेशन-बडोत, (जिल्ला-मेरठ) U. P.

३ श्रीमान् मोहनलालजि कोठारी जैन
ठि० स्वदेशी भण्डार मु० भरतपुर (राजपुताना)
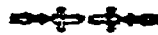
मुद्रकः-शेठ देवचंद दामजी कुण्डलाकरके आनंद प्री० प्रेस भावनगरमें इसि ग्रंथके ४ फर्मे छपवाये.

मुद्रकः-शा. फकीरचंद मगनलाल बदामी.
जैन विजयानंद प्री. प्रेस. सुरतमें इसिका शुरुके फर्मा छपवाया.

શ્રી યશોવિજયજી જૈન ગુરૂકુળના સસ્થાપક

પૂજ્યપાદ મુનિમહારાજ શ્રી ચારિત્રવિજયજી કચ્છી.

ધી જૈનાનંદ પ્રીં પ્રેસ દરીયા મહેલ—સુરત

श्री वीतरागाय नमः

प्रस्तावना

अद्यावधि शेठ नगीनभाइ मंछुभाइ जैन साहित्योद्धारक फंडकी ओर से पांच ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है. इनमें प्रथम पुस्तक श्रीमद् चंद्रतिलक उपाध्यायजी कृत श्री अभय कुमार चरित्र तीन भागमें प्रकाशित किया गया है। बाद में विद्यमान आचार्य-विद्वानोकी कृतियां जनता सन्मुख रक्खी जाय इस इरादेसे हमने आचार्यश्री १००८श्री विजयदान-सूरिश्वरजी रचित विविधप्रश्नोत्तर प्रकाशित किया। बाद में आचार्यश्री १००८श्री विजय लब्धि सूरिश्वरजी कृत वैराग्यरसमंजरी-पुस्तक प्रकाशित कीथी। अधुना श्री पालीताना (श्री सिद्धक्षेत्र) यशोविजयजी जैन गुरुकुल के स्थापक महात्मा मुनि महाराज श्री १००८ श्रीचारित्र विजयजी (कच्छी) के विद्वान् शिष्य मुनि महाराज श्री दर्शनविजयजी साहित्यिक, जिन्होने महाराष्ट्र, सी० पी० यु०पी० बंगाल, बिहार आदि प्रान्तों में विचर कर महान यात्राका लाभ लिया है और यु०पी० मेरठ जिले में सैकडो नये जैन बनाये है तथा जैन धर्म से विमुख होते हुए बहुतसे जैनोको धर्म सन्मुख किया है-धर्म में स्थिर रक्खे है.

आपहीके प्रयत्नद्वारा जो नये जैन हूए है; और जो धर्ममें स्थिर बने है ये सब अपने धर्ममें स्थिर बने रहे और आत्मकल्याण करे तथा ज्ञानके जरिये जैनधर्मके तत्व

ज्ञानको समजले, इस शुभ उद्देश्यसे वहां आपश्रीने जैन पाठशालाएं शुरु करवाइ है; मंदिरजोकी स्थापना कीगइ है. एवं अन्यभी शासन–समाजके उत्थानके बहोतसे प्रश्नोको वेहलकरने है–कर रहे है. ऐसे ऐसे शुभ कार्योमें बडीही लगनसे काम करके आप अपने आत्माकी और समाज–शासनकी सेवा कर रहे है.

आपश्रीने यह छोटीसी लेकीन अतीव महत्वकी किताब बनाइ है और इसमें मदरसेमें लडकोंकी पढाइमेंभी सुभीता हो यहभी खूब ख्याल रखा गया है. ऐसी किताब प्रकाशित करके धर्म विद्या पढनेके जिज्ञासु जीवोंको दिजाय तो बडाही लाभ हैं; ऐसो मूचना महाराजश्रीकी औरसे मीली और हमने बहुतही प्रेमसे यह मूचना स्वीकृत करके इस फंडसे यह किताब प्रकाशित की है.

श्रोवितरागदेव कथित धर्ममें जीवोंके हितके लिये श्रावक धर्मभी फरमाया गया है. इस धर्ममें सुदेव सुगुरु और सुधर्म की पहिचान करके सच्चे आत्मपथके मार्गमें चलनेके लिये प्रयत्नशील,–एवं; श्रद्धा और विवेकसे धर्मकार्यमे तत्पर रहेनेवाला जीव सच्चा श्रावक कहलाताहै–जैन बननेका पूरा अधिकारी है. 'ज्ञानस्य फलं विरतिः' इस पुनित सूत्रको लक्ष्यमें लेकर यह सुन्दर किताब पू. महाराजश्रीने तैयार की है. और विश्वास रखते है कि यह पुस्तक आबाल वृद्ध सभीको प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करानेमें सम्पूर्ण सफल बनेगा.

इस पुस्तकमें शुरूमेंही परम पवित्र नमस्कार महामंत्र चारशरणें प्रातःकालकी स्तुति–प्रार्थना जिनमंदिरमें जानेकी विधि सातोशुद्धि एवं मंदिरजीमें करनेका विधि यथा क्रमसे दिखाया है. तथा श्रीजिनवरेंद्रकी स्तुति; जिनपूजन विधि; नौअंगकीपूजाके दुहे: अष्टप्रकारीपूजाके दुहे; अष्टप्रकारी-पूजाका पाठ; पूजनसामग्री, श्रीजीके सामने स्वस्तिक आदि किस तरहसे करना और इनकी मतलब अच्छी तौरसे दिखाया गया है.

बाद में श्री जिनेश्वरदेवके सामने चैत्यवंदन करनेका विधि पाठ, शामसुबहके प्रत्याख्यान–पच्चक्खान, शामकी प्रार्थना–आरति, मंगलदीपक; शासन रक्षक श्रीमाणिभद्र-वीरकी स्तुति आरति; तथा मंदिरजीकी ८४ आशातनायें और इनसे बचनेकी सूचना, यह सभी अच्छी तरह दिख-लाया है.

श्रीमंदिरजीकी विधिके बादमें गुरुवंदना–विधि दिखाया है. यदि रास्तेके बीचमें साधुजी महाराज मिले तो किस तरह वंदना–विनय भाव करना; और गुरुकी तेत्तीस आशात-नायें; इनमें भी जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट कौन है और इनसे किस तरह बचाजाय यह भी दिखाया है.

बाद में सामायिक विधिपाठ; सामायिकमें कामकी चीजे–साधनं; इनका समय; और दोष रहित–विशुद्ध सामायिक

किस तरहसे बन शके; सामायिकमें कोनसे दोष किस तरहसे लगते है और इनसे कैसे बचाजाय यह सब समजाया है.

बाद में चार परिशिष्ट साथमें जोडके कितनीही आवश्यकीय बातें दिखाइ है. इनका संक्षिप्त परिचयभी यहां दिया जाता है.

प्रथम परिशिष्टमें श्रावक-जैनोंका कर्त्तव्य-सम्यक्त्वकी संक्षिप्त लेकिन अच्छी तरह व्याख्या की गइ है। और नित्य कर्म तथा श्रावकके मुख्य षट् कर्तव्य सूक्ष्मरूपसे दिखाये गये है।

दूसरे परिशिष्टमें गंभीर अर्थ संपन्न नमस्कार महामंत्रका अर्थ ओर जगतके जीवोंके सुखमें विघ्न डालने वाले सप्तव्यसन, और इनसे बचनेका उपाय बताया है।

तीसरे परिशिष्टमें श्री जिनप्रतिमा विचार, चार निक्षेप श्री स्थानांगसूत्र, समवायंगसूत्र, श्री ज्ञातासूत्र. श्री जंबुद्रीपप्रज्ञप्ति, आचारंगसूत्र, भगवतीसूत्र. अनुयोगद्वार, उववाइ, उत्तराध्यन और दशवैकालिक, आदि सूत्रोंके पाठोंसे श्री जिनप्रतिमा सिद्धि और इसकी आवश्यकता दिखाइ गइ है और—उनकी उपासनासे प्राणीको क्या फायदा है. वहभी युक्ति, श्रुति, और तर्कसे साबित किया है।

चतुर्थ परिशिष्टमें सूतक विचार, जन्म सूतक, मृत्यु सूतक, ऋतुवति विचार, आदि अच्छी तरह दिखाये गये है।

अर्थात् इस छोटी कीताबमें बहुतसी महत्वकी बातोंका संग्रह किया गया है. जैनधर्म श्रावकधर्म प्राप्त करनेकी

इच्छावाला हरएक मुमुक्षु इस किताबका अच्छी तरह लाभ लेकर आत्मकल्याणका महान पथ प्राप्त करे। इस शुभेच्छासे में यहां ही विराम करता हुं।

वीर सं. २४६१
ज्ञानपंचमी
गोपीपुरा-सुरत

लि: श्री संघसेवक
भाइचंद नगीनभाइ जवेरी

अनुक्रम

शुद्धि पत्रक.

पृष्ठ २१ में मणिभद्र महावीरकी स्तुति छपी है सो निम्न प्रकारसे पढना ॥

वीरेन्द्रः स्वच्छमूर्तिर्जिनपतिचरणाऽऽसेविता सिद्धिदाता।
आरूढो दिव्यनागं मुनिपतिविमलाऽऽनंद सेवाप्रवीणः
शूण्ढास्यो दिव्यरूपः सुरमणि–सुरभी–कल्पकुम्भैः समानः
यक्षः श्रीमाणिभद्रः प्रदिशतु कुशलं बुद्धिसिद्धीः समृद्धिं

भगवान् श्री महावीरस्वामी

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भूतश्रिया ॥
महानंदसरोराज–मरालायार्हते नमः ॥ १ ॥

फीनीक्ष प्री. वर्क्स, अमदावाद

श्री श्रावकविधि पाठ.
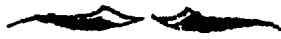
(श्री जिनपूजा, गुरुवंदन और सामायिक)

नित्यपाठ

श्रीनमस्कार महामंत्र

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं ।

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

चत्तारिमंगल सूत्र

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं ।
सिद्धा मंगलं । साहू मंगलं ।
केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ २ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा ।
सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा ।
केवलिपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ३ ॥

चत्तारिसरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि ।
सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जामि ।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ४ ॥

अंत्य मंगलं

मंगलं भगवान् वीरो । मंगलं गौतमप्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या जैनधर्मोऽस्तु मंगलं ॥ ५ ॥
अंगूठे अमृत वसे । लब्धितणा भंडार ।
ते गुरु गौतम समरिए । मनवंछित फल दातार ॥६॥
सर्वमंगलमांगल्यं । सर्वकल्याणकारणं ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां । जैनं जयति शासनं ॥ ७ ॥

विधि—रोजाना प्रातःकालमें यह पाठ करना चाहिए.

श्रीजैनमंदिरविधि.

श्रावक को ७ प्रकार से शुद्ध होकर जिनमंदिरजी में प्रवेश करना चाहिए, जो इस प्रकार—

१ मनशुद्धि—मन को मोह कषाय से रहित बनाना.

२ वचनशुद्धि—वानी को काबू में रखना सपाप वचन-का त्याग.

३ शरीरशुद्धि—काया को जयणापूर्वक छना जल से स्नान कर पवित्र बनाना.

४ वस्त्रशुद्धि—दर्शन करना हो तो सर्वांग-वस्त्र पहेनना, पूजा करना हो तो धोती, उत्तरासन और मुखकोष पहेनना, जनाना को लेंगा, कुडती, धोती (ओढनी) और मुखकोष (बडा रुमाल) पहेनना चाहिए। पूजा में टूटे फटे सीले मेला कुचेला और उद्भट (बेजा व अभिमानसूचक) वस्त्र का त्याग.

५ धनशुद्धि—नीति से प्राप्त लक्ष्मी को काम में लेना.

६ पूजोपकरणशुद्धि—पूजा में अच्छा बहु कीमती साफ और शुद्ध पानी, चंदन, फूल, धूप, दीपक (चीराग), चावल, निवेद, फल, वर्तन विगेरहका इस्तेमाल करना चाहिए।

७ भूमिशुद्धि— पूजा का स्थान पवित्र रखना चाहिए।

इस प्रकार शुद्ध बनकर चावल फल विगेरह लेकर मंदिरजी में जाना चाहिए। खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। मंदिरजी के दरवजा में घुसते समय तिन वार " निसिही " शब्द कहना। भीतर में जाकर मंदिरजी की व्यवस्था देखना चाहिए। देव-द्रव्य की निगरानी-संभाल करना चाहिए। पीछे जिनालय से कचरा निकाल कर—साफसूफ कर के जिनेश्वर का दर्शन करना। भगवान्जी को देखते हि सिर नमाकर " नमोजिणाणं " कह कर प्रणाम करना। बाद में स्तुति बोलना चाहिए.

स्तुति.

दर्शनं देवदेवस्य. दर्शनं पापनाशनं ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥
दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनाद् वांछितप्रदः ।
पूजनात्पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात्सुरद्रुमः ॥२॥
तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाऽर्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलाऽमलभूषणाय ।

तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ ३ ॥
शांतसुधारस मुख है, सूनासम है काय,
नेन कृपारस मेघ है , जय जय श्रीजिनराय ॥४॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ! ॥ ५ ॥

यह बोलने के बाद जिनमूर्ति को दाहिणी ओर से ३ प्रदक्षिणा देना चाहिए.

अब श्रावक को पूजा करना हो तो पूजा कर बाद में चैत्यवंदन करे, और जिनपूजा करना न हो तो सीर्फ चैत्य-वंदन करे.

जिनपूजा की छोटी विधि.

स्नान से पवित्र होकर धोती, उत्तरासन और मुखकोष पहेन कर, कपाल में केसर की टीकी तिलक बना कर, पूजा का सामान लेकर जिनमंदिर के गर्भगृह (गभारा) में प्रवेश करना चाहिए । प्रवेश करते ही तिन वार "निसिही" शब्द कहना । पीछे गत दिवस की पूजा उतार कर अष्ट प्रकारी* या सत्तरह भेदी पूजा करना चाहिए ।

---

* जल, चंदन, फुल, धूप, दीपक, चावल, निवेद और फल इसी से अष्टप्रकारी पूजा होती है.

अभिषेक चंदनपूजा वस्त्र वासक्षेप फुल फूल की माला पांच रंगी फूल चूर्ण (चूरा) ध्वजा आभूषण फुलघर फूलडेर अष्टमंगल धूप गीत नाच और वार्जित्र इसी से २१ प्रकारी पूजा होती है.

अष्टप्रकारी पूजा में जल चंदन और फुल से अंगपूजा होती है। दीपक भगवान की दाहिणी ओर व धूप बांइ ओर रखना चाहिए.

चावल नयाअनाज मोति या माणेक से भगवान् की सामने पाटापर स्वस्तिक (सथिया) करना चाहिए.

स्वस्तिक बनाने में चार गति से छुटने की भावना करना, उन के उपर चावल विगेरह की तिन ढेर करना और ज्ञान–दर्शन–चारित्र पाने की भावना धरना, उन के उपर सिद्धशिला की चन्द्र जेसी आकृति बनाना और सिद्धपद पाने की मांग करना ।

निवेद और फल स्वस्तिक और सिद्धशिला के उपर रखना चाहिए.

नव अंग पूजा का पाठ

प्रभु चरन में सिर धरे सो नर पावे सुख
अंगूठा में टीकी से पूजो श्री जिनभूप १
गोडा से काउसग्ग कीया विचरे देशविदेश
खडा खडा केवल लहा पूजो जानु जिनेश २
लोकांतिक के वचन से दीना वर्षीदान
प्रभु हात की नवज में पूजोजी बहुमान ३
अनंत वीरिज देख कर गये क्रोध और मान
कंधे से प्रभु भवतरे पूजो कंधाठान ४
सिद्धशिला के उपरे जाकर बसे जिणंद
इसी से सरपर चोटी को पूजो अति आनन्द ५
तीर्थंकर तिनलोक में तिलक सा जयवंत
मत्था मे तिलक करो पूजो श्री भगवंत ६
पेंत्तिस वाणी गुण से देते है उपदेश
मालकोश लय राग से पूजो गला जिनेश ७
हृदयकमल के स्थान से गये द्वेष का धंद
हृदयकमल में प्रेम से पूजो श्री जिनचन्द ८
तिन रत्न की स्थापना सभी गुणो का स्थान
नाभिफूल को पूजिए हो आतम कल्यान ९
परिपूर्ण नव अंक ज्यूं उपदेशे नवतत्त्व
दर्शन पूजन देव का वीरविजय कहे तत्त्व १०

अष्टप्रकारी पूजा का पाठ

(१)

श्री जिन की पूजा करो भर के जल सुगंध
साफ करो मल—पाप को लहो दर्शन गुणरंग १
तपत चीज ठंडी करे शीतल चंदनरूप
चंदन से प्रभु पुजीए मिटे मोह का धूप २
मोगरो चांपा मालती प्रभु पूजो भर फूल
फूल से जिन आंगी रचो पाओ सुख अमूल ३
धूप उखेवो विनय से प्रभु सन्मुख अतिमान
दुर्गंधता दूर से हटे पाओ अमर विमान ४
धरो दीप प्रभु सामने हरे मोह—अज्ञान
लोकालोक प्रकाशकर पाओ केवलज्ञान ५
अत्तत शिवपद के लीए अक्षतपूजा सार
प्रभु की सामने धारकर पाओ भव का पार (६)
हे प्रभु चार गति हरो सत्थिओ करुं सुजान
तिन रत्न दो दास को सिद्धशिला में स्थान ६
शुचि निवेद का थाल को धरो प्रभु दरबार
पाकर तप की शक्ति को पा'लो पद अणाहार ७
प्रभु को फल से पूज कर करो सफल मनुजन्म
फल मांगो सादि अनंत जय जय हो जिनधर्म ८

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥×

अष्टप्रकारी पूजा का पाठ

(२)

१ गंगा नदी फुनि तीर्थ जल से कनकमय कलशे भरी
निज शुद्धभाव से विमल होवे न्हवन जिनवर को करी
भवपापतापनिवारणी प्रभुपूजना जगहितकरी
करुं विमल आतम कारने व्यवहार निश्चय मन धरी

मंत्र—ॐ ह्रीँ श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहाः ॥

२ सरस चन्दन घसिय केसर भेली मांही बरास को
नव अंग जिनवर पूजते भवि पूरते निज आस को
भव० मंत्र—ॐ ह्रीँ ० चंदनं यजामहे स्वाहाः ।

३ सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा आदि से प्रभु कीजिए
पूजा करी शुभयोग तिग गति पंचमी फल लीजिए
भव० मंत्र-ॐ ह्रीँ ० पुष्पाणि यजामहे स्वाहाः ।

×यह मंत्र सभी पूजा पाठ में अलग अलग पढना.

४ दशांग धूप धुखाय के भवि धूपपूजा से लिये
फल उर्ध्वगति समधूप दहि निजपाप भवभव के किये
भव० मंत्र--ॐ ह्रीँ० धूपं यजामहे स्वाहाः ।

५ ज्युं दीपके परकास से तम-चोर नासे जानिये
यूं भाव दीपकनाण से अज्ञान नास वखानिये
भव० मंत्र--ॐ ह्रीँ० दीपं यजामहे स्वाहाः ।

६ शुभ द्रव्य अक्षत पूजना स्वस्तिक सार बनाइये
गति चार चूरण भावना भवि भावसे मन भाइये
भव० मंत्र--ॐ ह्रीँ० अक्षतान् यजामहे स्वाहाः ।

७ सरस मोदक आदि से भरि थाली जिनपुर धारिये
निर्वेद गुणधारी मने निजभावना जनि वारिये
भव० मंत्र--ॐ ह्रीँ० नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ।

८ फल पूर्ण लेने के लीए फलपूजना जिन कीजिए
पण इंद्रिदामी कर्मवामी शाश्वतापद लीजिए
भव० मंत्र--ॐ ह्रीँ० फलानि यजामहे स्वाहाः ।

अष्टप्रकार से पूजा कर के गर्भगृह से वहार आकर तिन वार "निसिही" कह कर भावपूजा (चैत्यवंदन) करना चाहिए।

चैत्यवंदनविधि पाठ.

विधि—पवित्र होकर शुद्ध वस्त्र पहेनना। तीन वार "निसिही" कह कर मंदिरजी में प्रवेश करना। सरपर चंदन की टीकी (तिलक) लगाना। भगवान् की स्तुति करना। तिन प्रदक्षिणा देना। इस के पीछे "इरियावहिया-विधि" करना चाहिये। इसिके बाद ३ खमासमण देकर चैत्यवंदन करना चाहिए।

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

विधि—इस पाठ को खडा होकर ३ वार बोलना और ३ वार पंचांग-नमस्कार करना।

इस के बाद बेठकर दाहिणा गुडा को जमीन से लगाना, बाया गुडा को खडा करना, दोनुं हाथ को जोडना, १० आंगुली को सिर से लगाना और सर को जरासा नमाना, इसी प्रकार बेठकर इस पाठ कहना.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
चैत्यवंदन करुं? इच्छं

१ चैत्यवंदनसूत्र*

सकलकुशलवल्ली-पुष्करावर्तमेघो।
दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥

*दो चैत्यवंदन दीया है उन में से एक ही चैत्यवदनसूत्र बोलना चाहिए।

भवजलनिधिपोतः. सर्वसंपत्तिहेतुः ।
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शांतिनाथः ॥ १ ॥

ऋषभ अजित संभवप्रभु, अभिनंदन सुमति
पद्मप्रभु व सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभु सुविधि ॥१॥
शीतल श्रेयांस व वासुपूज्य, विमलनाथ अनंत
धर्म शांति जिन कुंथु अर, मल्लिनाथ गुणवंत ॥२॥
मुनिसुव्रत नमि नेमिनाथ, पार्श्वनाथ वर्धमान
यह चोईसे जिनवरा. करो जगतकल्याण ॥ ३ ॥

२ जगचिंतामणि चैत्यवंदन

जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ।
जगबंधव जगसत्थवाह जगभावविअक्खण ॥
अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठविणासण ।
चउविसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहयसासण ॥१॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलीण कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण समणह कोडि सहस दुअ थुणिजिय निच्च विहाणि ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि, उज्जित पहु नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरि मंडण, भरुअच्छहिं मुणि-सुव्वय मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥

चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि तीआणागय संपइअ ॥ वंदुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ।
बत्तीसयबासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥
पनरस कोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।
छत्तीस सहस्स असियाइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥५॥

अथ जंकिंचि

जं किंचि नामतिथ्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

अथ नमुत्थुणं [शक्रस्तव]

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहथ्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्व-

न्नुणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अथ जावंति चेइआइं

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वन्दे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

अथ जावंत केवि साहू

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

अथ परमेष्ठिनमस्कार

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

अथ उपसर्गहरस्तोत्र १ पार्श्वनाथस्तवन+

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥
तस्स गहरोगमारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

+ यहापर हरकोइ स्तवन-पद बोल सकते है ।

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥
नरतिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

---

२ ॥ जिनस्तवन ॥

(राग-वनजारा, वनघटा भूवन रंग छाया—नव०)

चोवशि जिणंद जयकारा, प्रभु अधम उद्धारण हारा—टेक०
वृष लंछन वृषभजिनंदा, जिन अजित आजित गुणवृंदा ।
संभव शमरस दातारा, अभिनन्दन अभिव्रतचारा । चो० १

सुमति सुमति का दाता, प्रभु पद्मे पद्म पद राता ।
शुभपार्श्व सुपार्श्व उदारा, प्रभु चंद्र चंद्र शितधारा । चो० २

सुविधि शिवसुविधि दाखी, शीतल शीतलपद साखी ।
श्रेयांस श्रेय करनारा, वसुपूज्य पूज्य तपचारा । चो० ३

जिनविमल विमलता सोहे, श्री अनन्त अनन्तगुण मोहे ।
जिनधर्म धर्मपति प्यारा, जिनशांति शांति करनारा । चो० ४

कुंथु कुस्थान निवारे, जिन अर भवअरति वारे ।
जिनमल्लि मल्लमद मारा, मुनिसुव्रत सुव्रत क्यारा । चो० ५

नमिनाथ नमे सुर इन्दा, शुभनेम नेम शिवनन्दा ।
पारससम पार्श्व विचारा, महावीर वीर प्रभु प्यारा । चो० ६
चोवीशजिणंद दिलहारा, वन्दन पूजन उपचारा ।
चारित्र चरण आधारा, जिनदर्शन भव निस्तारा । चो० ७

विधि—उनके बाद दोनो हाथ को, जोडी हुइ सीप के समान जोड कर मुक्ताशुक्ति मुद्रा बना कर जयवीयराय सूत्र—आभव-मंखडा तक पढना. फिर मस्तक से हाथ को नीचे उतार कर आगे पाठ बोलना. स्त्रियों को मस्तक से हाथ रखने की मना है.

अथ जय वीयराय

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइ वि निआण-बंधणं वीयराय तुह समए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभोअ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥
विधि—अब खडा होकर नीचे का पाठ बोलना चाहिये.

अथ अरिहंतचेइयाणं सूत्र

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्ति-आए ॥ २ ॥

सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमा-णीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥

अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छिएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

विधि—यह पाठ बोल कर काउसग्ग करना। स्थिरता से खडा रहना, दोनु हाथो कों नीचे लटकाना, दोनो पेर के बीच में ४ आंगुल का अन्तर रखना, दोनु पानी बीच ३ आंगुल का अंतर रखना और दृष्टि भगवान की ओर स्थापित करना। इस प्रकार एक नमस्कारमंत्र (नवकार) का ध्यान करना।

नमस्कार (नवकार) मंत्र

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं ।
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच नमुकारो । सव्वपावप्पणासणो ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

विधि—बाद में काउसग्ग (ध्यान) पार के "नमो अरिहंताणं" कहना ॥ इस के पीछे दोनु हाथ जोड कर "नमोऽर्हत्" तथा "स्तुति" बोलना चाहिए.

नमोऽर्हत् (परमेष्ठि नमस्कार) सूत्र

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

स्तुति (थोय)×

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं। संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं । भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

विधि—यहां शक्ति के अनुसार नवकारशी, पोरशी, एकासणुं व्रत विगेरे पच्चक्खाण करना चाहिए ॥

नमुक्कारशी (नवकारशी) पच्चक्खाण पाठ *

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ

× यहांपर कोइ भी स्तुति बोली जाती है ।

* इन पच्चक्खाण का समय सूर्य का उदयकाल से लेकर ४८

चउव्विहंपि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ १ ॥

चौविहार व्रत का पच्चक्खाण पाठ

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागा-रेणं वोसिरे ॥ १ ॥*

सामका चउविहार पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्त-रागेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ १ ॥×

मीनिट तक का है । यहा तक कुछ खानापीना नहीं। समय खतम होने से एक स्थान में स्थिर बेठ कर मुट्ठी जमीन पर स्थापन कर एक नवकार का पाठ बोलकर पारना चाहिए ॥

* इस पच्चक्खाण लेनेवाला को सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन का सूर्योदय तक अनाज पानी खाद्य (मिष्टान्न फल) और मुखवास इत्यादि कुछ भी खाना नहीं चाहिए ॥

× इस पच्चक्खाणवाला को साम से लेकर सूर्योदय तक अनाज पानी खाद्य व मुखवास विगेरे खाने की मना है ॥

॥ आरती व मंगलदीपक ॥

विधि—अष्टप्रकारी पूजा के अन्त में व साम के समय में मंदिरजी को बन्ध करने से पहिला घीकी पांच बत्ती से जिनेश्वर भगवान् की आरती उतारना चाहिए। वैसे ही शासन-देव, शासनदेवी व माणिभद्रजी विगेरह की भी आरती उतारना॥ साम को आरती के बाद घीकी एक बत्ती से मंगलदीपक उतारना चाहिए॥

॥ आरती ॥ (राग–पीलु)

जय जय आरती जगसुखकारी, चोईसे जिनवर उपगारी १
पहिली आरती च्यवन मनाया, चार गति का ऋण चूकाया २
दुसरी आरती जन्म को धारा, सातो नरक में हुआ उजिआरा ३
तिसरी आरती दीक्षा लीनी, आत्मरमणकी साधना कीनी ४
चौथी आरती केवल पाया, समवसरन मे संघ बनाया ५
पांचवी आरती सिद्धस्वरूपी, हूए चिद्घन अमर अरूपी ६
पांचो आरती प्रेमसे कीजे, पांचवी गति दर्शन पाईजे ७

॥ मंगलदीपक (राग–पीलु) ॥

मंगलदीपक मंगल पाया, आरतीसे शुभ आयु बढाया १
भरत सगर श्रेणिकजी राया, कुमरपालने मंगल गाया २
आरती करके पाप कटाया, आनंद ओच्छव खुशी मनाया ३

धन्य दिवस घडी आज गवाया, ज्यूं दिवाली पर्व मनाया ४

चारित्र मंगल अम घर पाया, दर्शन मंगल संघ में सवाया ५

॥ माणिभद्र महावीर ॥

॥ स्तुति ॥

वीरेन्द्रः स्वच्छमूर्तिर्जिनपतिचरणाऽऽसेविनां सिद्धिदाता ।
आरूढो दिव्यनागं मुनिपति विमलाऽऽनंद सेवाप्रवीणः सुरमणि ॥
शूण्ढास्यो दिव्यरूपः सुरभीकल्पकुम्भैः समान ।
यक्षः श्रीमाणिभद्रः प्रदिशतु कुशलं बुद्धिसिद्धिसमृद्धिं ॥ १ ॥

गुण गाता गरहट्ट, अन्न धन कपडो आवे ॥
गुण गाता गरहट्ट, प्रगट घर संपट्ट पावे ॥
गुण गातां गरहट्ट, राजमान भोज दीरावे ॥
गुण गातां गरहट्ट, लोक सहु पूजा लावे ॥
सुख कुशल आशा संफल, उदयकुशल एणी परे कहे ।
गुण माणिकना गावतां, लाख लाख रीझा लहे ॥ १ ॥

॥ आरती ॥

(राग—जयदेव जयदेव !)

जयवीर ! जयवीर !

पहिली आरती माणिभद्रजी, हाती असवारी ।
जैन धर्म की झंडा, फरकावे सारी ॥ जय० १ ॥

दुसरी आरती माणिभद्रजी, डमरो ध्वज राजे ।
दोय धर्म के पोषक, अजमुख बीराजे ॥ जय० २ ॥

तिसरी आरती माणिभद्रजी, वर अंकुशधामी ।
तिन रतन की चोकी, करे त्रिशुलधारी ॥ जय० ३ ॥

चौथी आरती माणिभद्रजी, भूवनपति देवा ।
चार संघ की सारे, सुखसंपत सेवा ॥ जय० ४ ॥

पांचवी आरती माणिभद्रजी, दर्शन गुण पाया ।
हेमविमलसूरि की, आज्ञा दिल लाया ॥ जय० ५ ॥

जयवीर ! जयवीर ! !

॥ जिनमंदिरजी की आशातनाएँ ॥

आय+शातना । ज्ञान, दर्शन व चारित्र के लाभ को दूर करे–खंडन करे–उसें आशातना कहते है, जीन का ३ प्रकार है. १–जघन्य, २–मध्यम ३–उत्कृष्ट.

१=जघन्य आशातना—वासक्षेपकी, वरासकी और केशर की, डब्बी तथा रकेबी, कलश प्रमुख भगवान् साथ अथ-

ड़ाना, पछड़ाना अथवा अपना नासिका मुख को स्पर्श किये हुए वस्त्र प्रभु को लगाना। यह देव की जघन्य आशातना समझना।

मध्यम आशातना—मुखकोष बांधे विना या उत्तम निर्मल धोती पहने विना प्रभुकी पूजा करना, प्रभुकी प्रतिमा जमीन पर पटकना, अशुद्ध पूजन द्रव्य प्रभुपर चढ़ाना, पूजाकी विधि का अनुक्रम उल्लंघन करना। यह मध्यम आशातना समझना।

उत्कृष्ट आशातना—प्रभुकी प्रतिमा को पैर लगाना, श्लेष्म, खंकार, थूंक वगैरह के छींटे उडाना, नासिका के श्लेष्म से गलीत हुये हाथ प्रभु को लगाना। अपने हाथ से प्रतिमा को तोड़ना, चुराना, चोरी कराना, वचन से प्रतिमा के अवर्णवाद बोलना, इत्यादि उत्कृष्ट आशातना समझना।

दुसरे प्रकार से भी जिनालय की जघन्य से १०, मध्यम से ४० और उत्कृष्ट से ८४ आशातना है। जघन्य-मध्यम का उत्कृष्ट में समावेश होता है, उन सभी का त्याग करना चाहिये।

८४ आशातना इस प्रकार है.

१ नासिका का मैल मन्दिर में डालना

२ जुआ, तास, सतरंज, चौपड़ वगैरह खेल मन्दिर में खेलना

३ मन्दिर में लड़ाइ करना

४ मन्दिर में किसी कला का अभ्यास करना

५ कुल्ला करना

६ तांबूल खाना

७ तांबूल खाकर मन्दिर में कूचा डालना

८ मन्दिर में किसी को गाली देना

९ लघुनीति बड़ी नीति करना

१० मन्दिर में हाथ, पैर, मुख, शरीर धोना

११ केस संवारना (हजामत कराना)

१२ नख उतारना

१३ रक्त (खून) डालना

१४ सूखड़ी वगैरह खाना

१५ फोड़ा, चाठें वगैरह की चमड़ी उतार कर मन्दिर में डालना

१६ मुख से निकाला हुआ पित्त वगैरह मन्दिर में डालना

१७ वहांपर वमन करना

१८ दाँत टूट गया हो तो मन्दिर में डालना

१९ मन्दिर में विश्राम करना

२० मवेशी को मन्दिर में बांधना

२१ दांत का मैल डालना

२२ आंख का मैल डालना

२३ नख डालना

२४ गाल बजाना

२५ नासिका का मैल डालना
२६ मस्तक का मैल डालना
२७ कान का मैल डालना
२८ शरीर का मैल डालना
२९ मन्दिर में भुतादिक निग्रह के मंत्र की साधना करना या राज्यप्रमुख के कार्य का विचार करने के लिए पंच ईकठे करवा कर बैठाना
३० विवाह आदि के कार्य के लिए मन्दिर में पञ्चों को बुलाना
३१ मन्दिर में बैठ कर अपने घर का या व्यापार का नामा लिखना
३२ राजा के विभाग का कर या अपने सगे सम्बन्धियों को देने योग्य विभाग का बांटना मन्दिर में करना
३३ मन्दिर मे अपने घर का द्रव्य रखना, या मन्दिर के भडार में अपना द्रव्य साथ रखना
३४ मन्दिर में पैर पर पैर चढ़ा कर बैठना
३५ मन्दिर की दिवाल का चौंतरे पर उपले बनाना व सुखाना
३६ मंदिर में अनाज सुखाना
३७ मंदिर में अपना वस्त्र सुखाना
३८ पापड सुखाना
३९ वडी, शाक, आचार वगैरह सुखाना

४० कोइ भी डर से गुभारे, तलवर व भंडार विगेरह में छिपना
४१ सगा की मृत्यु सुनकर रुदन करना
४२ मंदिर में स्त्री, राजा, देश व भोजन की कथा करना
४३ घर का यंत्र शस्त्रादि मंदिर में बनाना
४४ मंदिर मे मवेशी या पक्षि रखना
४५ जाडा उडाने के लिए अग्नि चेताना
४६ संसारिक कार्य के लिए मंदिर में रसोइ पकाना
४७ मंदिर में बेठ कर सीक्का चांदी रत्न की परीक्षा करना
४८ प्रवेश में व निकलने में निस्सिही व आवस्सही न कहना
४९ मंदिर में छत्ता लाना
५० मंदिर में जूत्ता लेजाना
५१ मंदिर में शस्त्र लाना
५२ मन से चंचल बनना
५३ मंदिर में तेल विगेरह की मालिश करना
५४ सचित्त फुल विगेरह धरकर प्रवेश करना
५५ रोजाना का आभूषण मंदिर में जाते समय निकाल देना (इस प्रकार करने से लोकमां धर्म की निंदा होती है)
५६ प्रभु को देखकर हाथ न जोडना
५७ एक शाटिक उत्तरासन विगर मंदिर में जाना
५८ मस्तकपर मुकुट पहेन कर जाना

५९ मस्तकपर मौली (वस्त्र) लपेट रखकर जाना

६० पगडी में रक्खा हुआ फुल के साथ जाना

६१ मंदिर में शर्त करना

६२ मंदिर में गेंद से खेलना

६३ मंदिर में बडे आदमी को नमस्कार करना

६४ मंदिर में हास्यचेष्टा—भांडचेष्टा करना

६५ किसि का तिरस्कार करना

६६ लेनदेनवाला दर्शन को आवे उन के निमित्त मंदिर में अडंगा लगाना

६७ मंदिर में लडाइ करना

६८ मंदिर में केश समारना

६९ मंदिर में पलोंथी लगाकर बेठना

७० काष्ठ के खडाउ पहन कर जाना

७१ पैर पसारना

७२ पगचंपी कराना

७३ हाथ पैर धोना, पानी गीरा कर कचिड करना

७४ वस्त्र से पैर झटकना

७५ मंदिर में कामक्रिडा स्त्रीसेवन करना

७६ जूं खटमलादि मंदिर में डालना

७७ मंदिर में भोजन करना

७८ गुह्य स्थान को खुल्ला रखना

७९ मंदिर में दृष्टियुद्ध वाहुयुद्ध खेलना

८० मंदिर में वैद्यक करना

८१ सोदा लेना व वेचना

८२ शय्या करके सोना

८३ मंदिर की परनाली से पानी लेना, पानी पीना

८४ मंदिर में स्नान करना, वास करना

बृहद्भाष्यमें कही हुइ ५ बडी आशातना.

१ अवज्ञा—पलोंथी लगाना, पीठ देना, पैरपसारना, उचे वेठना

२ अनादर—वेष में, शरीर में, वोलने में, ख्याल में गडवड गडवड चलावे

३ देवद्रव्य भोग—देवद्रव्य का नाश करना, प्रभु सामने पान विगेरह खाना

४ दुष्ट परिधान—राग—द्वेष—मोह से मलीन वृत्ति से पूजा करना

५—अनुचित् प्रवृत्ति—युद्ध, रुदन. विकथा, रसोइ, व्यापार, पशुबंधन, घर का कार्य, वैद्यक विगेरह करना

॥ श्री गुरुवन्दनविधि ॥

विधि—मंदिरजी में दर्शन-पूजा करके गुरु महाराजकी पास जाकर वन्दन करना चाहिए। प्रथम मन-वचन-शरीर से शुद्ध होकर, खडा होकर दोनु हाथ जोडकर इस प्रकार पाठ कहे—

॥ खमासमणसूत्र ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसिहियाए, मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

विधि—इस पाठ बोलते ही गुरुजी की सामने २ गुडा, २ हाथ व १ ललाट इस पांच एकट्ठा हो वैसे पंचांग नमस्कार करना, यहां "मत्थएण वंदामि" यह पाठ शिर झूकाते ही बोलना चाहिए-इस प्रकार ३ दफे खमासमण सूत्र पाठ से ३ खमासमण (नमस्कार) करना ॥

बाद में खडा खडा दोनु हाथ जोड कर बोलना—

॥ इच्छकारसूत्र ॥

*इच्छकार ! सुहराइ-सुहदेवसि, सुखतप शरीरनिराबाध सुखसंजमजात्रा निर्वहते होजी। स्वामीन् शाता हैजी ! आहारपानी का लाभ देनाजी ॥

* यदि सवेरसे १२ बजे तक गुरुवदन करना हो तो "सुहराइ" व "राइअं" बोलना और १२ बजेसे साम तक में गुरुवंदन करना हो तो "सुहदेवसि" व "देवसिय" पाठ बोलना ॥

॥ अब्भुट्ठिओ सूत्र ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं-देवसियं खामेउं ?

विधि—यहांपर गुरुमहाराज उत्तर देवे "खामेह" सो सुन कर आगे का पाठ-अंश बोलना।

इच्छं ! खामेमि राइयं ॥

विधि—बाद में नीचे झुककर गुडा को जमीन से छुला कर गुडा से जरासा उपर मुख रखकर बाया हाथ को मुखपर धार कर दाया हाथ को गुरु की सामने लंबाकर स्थापन करना और वडी आवाज से पाठ बोलना ॥

॥ गुरुवंदनसूत्र ॥

जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणये वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरीभासाए जंकिंचि मज्झ विणयपरिहिणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्मे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

विधि—वाद में खडा होकर हाथ जोडकर गुरुजी की पास इच्छानुसार नवकारशी व्रत विगेरह पच्चक्खाण करना

॥ रास्ता और रात्रि की विधि ॥

विधि—रास्ते में गुरुमहाराज मीले, जहां उपर लीखा हुआ गुरुवंदन करने की अनुकुलता न हो तो गुरु की सामने जरा शिर को नमा कर हाथजोडकर "मत्थएण वंदामि" कहना चाहिए ॥

गुरुजी की पास रात्रि को जाना हो तो जाते व आते समय "त्रिकाल वंदना" कहेना चाहिए ॥

॥ गुरु की आशातना ॥

विधि—गुरु के निमित्त की ३३ आशातना है, उन दोष का त्याग करना चाहिए, सो ३३ इस प्रकार है—

१ विना कारण गुरु से आगे चले
२ ठीक बगल में चले
३ पीछे नजीक में चले (खांसी छींक में छींटा से दोष लगे)
४ गुरु को पीठ कर बेठे
५ ठीक बगल में बेठे
६ पीछे नजीक में बेठे
७ सामने खडा रहे (दर्शन करनेवाले को हरकत होती है)
८ दोनो बगल में खडा रहे

९ ठीक पीछे खडा रहे
१० आहारपानी में गुरु से पहिला उठे
११ गुरु की पहिला गमनागमन को आलोवे
१२ रात को जागने पर भी प्रमाद से गुरु के प्रश्न का उत्तर न दे
१३ गुरु का कुछ कहने से पहिला खुद बोल उठे
१४ आहारपानी लाकर दुसरे साधु के वाद गुरु को कहे
१५ आहारपानी दुसरे साधु का बताकर गुरु को बतावे
१६ दुसरे साधु के वाद गुरु को आहार-पानी का निमंत्रण करे
१७ गुरु को विना पूछे दुसरे साधु को स्निग्ध आहार देवे
१८ गुरु को दिये बाद विनापूछे खूद स्निग्धादि भोजन करे
१९ गुरु का वचन सूना न सूना करे
२० गुरुकी सामने कठीन व बडी आवाज से बोले
२१ गुरु को वुलाने पर भी अपने स्थान पर वेठा हुआ उत्तर दे
२२ गुरु वुलावे तभी दूर से ही उत्तर दे कि क्या कहते हो
२३ गुरु का कहने पर जवाव दे कि-आप ही कर लो
२४ गुरु का व्याख्यान सूनकर नाखूश होना-दुःखी होना
२५ गुरु के कथन में बीच मे वोलने लगे ऐसा नहीं, एसा है इस प्रकार तान से वोलने लगे

२६ गुरु की कथा को रुक कर बीच में अपनी वात को लावे

२७ दुसरा वाना दिखला कर गुरु की मर्यादा को तोडे

२८ गुरु की कथा के बाद उन कथा का ही विस्तार कर के अपनी अकलबंदि बतावे, जो गुरु के अपमानरूप है

२९ गुरु के आसन को पेर लगावे

३० गुरु का संथारा को पेर लगावे

३१ गुरु के आसन पर खूद बेठे

३२ गुरु से उचा या समान आसन पर बेठे

३३ गुरु का वचन को सून कर " हां ऐसा है " इस प्रकार बीच में बोले

(आवश्यकचूर्णी, श्राद्धविधिप्रकरण)

अथवा ३ प्रकार से आशातना है

जघन्य—गुरु को पैर विगेरह से छुना

मध्यम—गुरु को श्लेष्म खकार व थूंक के छींटे उडाडना

उत्तर—गुरु का आदेश न मानना, विपरीत मानना, वचन न सूनना, पूछे का उत्तर न देना या अपमानपूर्वक बोलना

॥ इति गुरुवन्दनविधि समाप्त ॥

॥ सामायिक विधि ॥

विधि—श्रावक श्राविका शुद्ध भूमि में चौकी आदि उच्च आसनपर स्थापनाजी रक्खे। पीछे शुद्ध वस्त्र पहेन कर बेठने की जमीन को पुंज कर कटासणा वीछावे चरवला व मुहपत्ति को हाथ में लेकर सामायिक करे ॥*

स्थापनाजी.

विधि—यदि गुरुमहाराज मोजुद हो व उन की स्थापनाजी से सामायिक करना हो तो नमस्कारमंत्र-पंचेदिय सूत्र पाठ विना ही सामायिक करे, किन्तु गुरुजी का स्थापनाचार्य न हो तो सामने उच्च आसन पर शास्त्र या नवकारवाली (माला) विगेरह रख कर निम्नलीखित पाठ से उन का स्थापनाचार्य वनाना चाहिए सो इस प्रकार—

कटासणापर वेठकर वाये हाथ में मुहपत्ति लेकर, मुख की

---

*कटासणा—करीब सवाइ हाथ लवा व चौडा, एक ओर कन्नी (सीरा) वाला उन्नी-वीछाना ॥

चरवला—१ हाथ लंवी दाडी व ८ आंगुल करीब उनी की दशी (फली) वाला उपकरण. वह न हो तो सामायिक करनेवाला खडा न हो सके ॥

मुहपत्ति—१६ आगुल लवा चौडा एक ओर कन्नी (सीरा) वाला खद्दर का (सूती) आठ तहवाला रुमाल ॥

सामने रखकर, दाया (जिमणा) हाथ को उल्टा करके स्थापनाजी सन्मुख घर कर पंचमंगलरूप नमस्कार मंत्र व पंचिंदिय सूत्र कहे ।

॥ १ ॥ अथ नमस्कारमन्त्र ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥
नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥
नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥

एसो पञ्च नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

पंचिंदिअ संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ॥
चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥
पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालणसमत्थो ॥
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

॥ सामायिक ॥

विधि—गुरुजी के स्थापनाजी* या उपर लीखित विधि से बनाया हुआ स्थापनाजी सामने चरवला हो तो खडा होकर व चरवला न हो तो बैठ कर इस प्रकार बोले।

॥ ३ ॥ खमासमण-सूत्र ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं
जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥

विधि—इस पाठ बोलते हि जमीन तक शिर जुका कर खमासमण देना ॥ पीछे खडा होकर इरियावहिया विगेरह सूत्र बोलना ॥

॥ ४ ॥ अथ इरियावहियं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराह-

---

* स्थापनाचार्य की आशातना नहीं करना चाहिए, सो तिन प्रकार है ॥

जघन्य—स्थापनाजी को चलाना, वस्त्र शरीर या पैर से स्पर्श करना ॥

मध्यम—भूमिपर गिराना, वेपरवाइ से रखना, अवगणना करना ॥

उत्कृष्ट—स्थापनाजी को गुम करदेना, पटकना, तोड देना विगेरह ॥

ज्ञान दर्शन व चारित्र के सभी उपकरणों की भी उपर लिखित आशातना होती है, सो वर्जना चाहिये ॥

णाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

॥ ५ ॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

॥ ६ ॥ अथ अनत्थ ऊससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

विधि—इस के बाद १ लोगस्स या ४ नमस्कार मंत्र का

काउस्सग्ग करना बाद में ऊंची आवाज से " नमो अरिहंताणं " बोल कर " लोगस्स " बोलना.

॥ ७ ॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥
अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणन्तं च जिणं, धम्मं सन्तिं च वन्दामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभित्थुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा ॥
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया. जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासरा ॥
सागरवरगम्भीरा. सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

विधि—खमासमण देना÷ और बोलना—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? (यहां गुरुजी हो तो वचन कहे-पडिलेहेह) इच्छं ॥

÷ जहां जहां खमासमण देने का है, वहां वहां (पृष्ठ ३६ से) खमासमण सूत्र-३ बोलकर खमासमण देना चाहिए ॥

विधि—मुहपत्ति का बोल आते हो तो ५० बोल से और न आते हो तो वैसे ही मुहपत्ति का पडिलेहण करना चाहिए ।। बाद में खमासमण देना.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ?

(गुरुवचन—संदिसावेह) इच्छं ॥

विधि—खमासमण देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ?

(गुरुवचन—ठावेह) इच्छं ॥

विधि—दोनुं हाथ जोड कर खडे खडे नमस्कार मंत्र सूत्र १ कहना । पीछे बडी आवाज से बोलना कि—

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिकदंडक उच्चरावोजी ॥

विधि—यहां गुरुजी, वडिल पुरुष या खुद " करेमि भंते सूत्र " कहे ॥

इस पाठ को जरासा सिरसे जूक कर सुणना चाहिए ॥

॥ ८ ॥ करेमि भंते सूत्र (सामायिक पच्चक्खाण) ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव-नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

विधि—खमासमण देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ?

(गुरुवचन-संदिसावेह) इच्छं ॥

विधि—खमासमण देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ?

(गुरुवचन-ठावेह) इच्छं ॥

विधि—खमासमण देना।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ?

(गुरुवचन-संदिसावेह) इच्छं ॥

विधि—खमासमण देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करुं ?

(गुरुवचन-करेह) इच्छं ॥

उन के बाद नमस्कारमंत्र सूत्र तिनवार बोलना चाहिए॥

—सामायिक में २ घड़ी (४८ मीनिट) तक मन-वचन व शरीर को स्थिर कर, प्रमाद-विकथा छोड कर, प्रतिक्रमण, पठन-पाठन, ध्यान, स्वाध्याय और काउसग्ग विगेरेह धर्मकार्य करना चाहिइ ॥

॥ इति सामायिक लेने का विधिपाठ समाप्त ॥

॥ सामायिक पारने की विधि ॥

विधि—सामायिक का समय २ घडी (४८ मीनिट) है। बाद मे नया सामायिक लेवे या उन सामायिक को पारे॥

सामायिक पारना हो तो स्थापनाजी सामने खडा होकर हाथ में चरवला मुहपत्ति लेकर खमासमण (सूत्र–३) देवे। पीछे दोनु हाथ जोडकर मुहपत्ति को मुख की पास रखकर अनुक्रम से—

४–इरियावहियं सूत्र, ५–तस्सउत्तरीसूत्र ६–अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र (पृष्ट ३६–३७ से) कहे॥

इस के बाद एक लोगस्स (सूत्र–७) का काउसग्ग करके, बडी आवाज से "नमो अरिहंताणं" बोल कर, ७–लोगस्स सूत्र (पृष्ट ३८ से) कहे॥

विधि—पीछे खमासमण देना।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं?

(गुरुवचन–पडिलेहेह) इच्छं॥

विधि—मुहपत्ति का बोल आते हो तो ५० बोल से और न आते हो तो वेसे ही मुहपत्ति का पडिलेहण करना॥

बाद में—खमासमण देना।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारुं?

(गुरुवचन—पुणो वि कायव्वं)—यथाशक्ति ॥

विधि—खमासमण देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारा ।

(गुरुवचन—आयारो न मोतव्वो) तहत्ति ॥

विधि—बाद में दाहिणा (दाया) हाथ को चरवला या कटासणा के उपर स्थापन कर के—**नमस्कारमंत्र** (सूत्र—१) कहना चाहिये ॥

इस के पीछे सामाइयवयजुत्तो सूत्र बोलना चाहिए ॥

॥ ९ ॥ सामाइयवयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारने का पाठ)

सामाइयवयजुत्तो, जावमणे होइ नियम संजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिआ वारा ॥ १ ॥
सामाइयंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधि से लीया, विधि से पारा । विधि करते जो कोइ अविधि आशातना हुआ हो, उन सभी का मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

मन का दश, वचन का दश व शरीर का बारह इन बत्तीस दोष में से कोइ भी दोष लगा हो, उन सभी का मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं ॥४॥+

+ सामायिक का ३२ दोष इस प्रकार है.

मन का १०—अविवेक, नांवरी की इच्छा, धनकी इच्छा, व्रत का

विधि—गुरुजी की स्थापना की सामने सामायिक लेने वाला–पारनेवाला यहां तक ही विधि करे, किन्तु शास्त्रजी या माला को पंचेंदिय सूत्र से स्थापनाचार्य वना कर सामायिक लेनेवाला श्रावक स्थापनाजी की भी अधिक वीधि करे, याने दाया (दाहिणा) हाथ को स्थापना की सामने लंबा कर, उपर खुल्ला रखकर (उत्थापन मुद्रा वनाकर) एक नमस्कार मंत्र (सूत्र १) का पाठ करे ॥

वाद में खडे होते ही वडी आवाज से बोलना चाहिए कि—

बोल श्री महावीर भगवान की जय.

॥ इति सामायिक विधि समाप्त ॥

अभिमान, डर, नियाणा करना, फल का संशय रखना, क्रोध कषाय से वर्तना, अविनयी वनना, वेपरवा रखना ॥

वानी का १०—कुत्सित वाणी, वेविचार बोल देना, निरपेक्षवानी (बेजावानी) कलंक देना, सूत्रपाठ विगेरे में संक्षेप करना, जगडना, विकथा करना, हसना, पाठ जूठा बोलना, पाठ बोलने में गोलमाल करना (मुणमुण पाठ) ॥

शरीर का १२ दोष—उद्धत आसन, अस्थिर आसन, अस्थिर दृष्टि, सावद्य काम करना, सहारा से वेठना, हाथ को चलाते रखना, आलस, मोटन (चटकना फोडना), खुजली खुजाना, चिन्ता करना, शरीरपर वस्त्र लपेट कर रखना, निंद लेना ॥

यह बत्तीस दोष लगाना नहीं चाहिए ॥

परिशिष्ट १

श्रावक कर्तव्य.

सम्यक्त्व पाने के बाद ही मनुष्य जैन है—श्रावक है। जहां तक सम्यक्त्व नहीं है वहां तक जैनत्व नहीं है।

सुदेवादि ३ तत्त्व में श्रद्धान होना सो सम्यक्त्व है।

१ सुदेव—अरिहंत, सर्वज्ञ, १२ गुणों से संयुक्त व रागादि १८ दूषणो से रहित जो कोई देव है वे सुदेव है।

२ सुगुरु—पांच महाव्रत के धारक, कंचन-कामिनी के त्यागी, सर्वज्ञकथित धर्म के उपदेशक सुगुरु है।

३ सुधर्म—केवलिसर्वज्ञप्रणीत, स्याद्वादमय, दयामय व जगत के हितकारक है वही सुधर्म है।

इन्हि तिनो तत्व उपास्य है—आदेय है। इसी से विपरीत कुदेव, कुगुरु ओर कुधर्म का श्रद्धान करना सो त्यागने योग्य है।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है, जिस को धारण करना चाहिए॥

श्रावक को रोजाना नीम्न लीखित ६ कार्य अवश्य करना चाहिए, जो मनुष्य जीवनरूप कल्पवृक्ष के फल है।

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्तिः, सत्त्वानुकम्पा शुभपात्रदानम् ॥
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि ।१।

१ जिनेन्द्रपूजा—तीर्थंकर की पूजा-भक्ति करना ।

जो करने से पाप का विनाश होता है, लक्ष्मी मीलती है, यश वढता है, स्वर्ग पूज्यपद और मोक्ष मीलता है ॥

२ गुरुभक्ति—साधुजी की उपासना-सेवा करना ।

गुरु की नवधा भक्ति करने से पाप का क्षय होता है, ज्ञान मीलता है, धर्म की वृद्धि होती है, आत्मकल्याण होता है ।

३ जीवदया—सभी जीववर्ग में प्रेम रखना ।

जो करने से जगत में भ्रातृभाव वढता है, पौद्गलिक भावना दूर होती है, क्रूरता हटती है, क्षमा टपकती है, योग-शुद्धि होती है व आश्रव रूक जाता है, आत्मस्वरूप की पिछान होती है व आत्मा आनंदघन बनता है ।

४ सुपात्रदान—न्यायोपार्जित द्रव्य का साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ज्ञानभंडार, जिनप्रतिष्ठा व जीर्णोद्धार निमित्त व्यय करना ।

जो करने से लक्ष्मी की सफलता होती है, त्याग बढता है, अपरिग्रहता आती है, लोभ घटता है आत्मा को अनंतगुण लक्ष्मी मीलती है ॥

अभयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, उचितदान व कीर्ति-दान, गृहस्थ यह ५ प्रकार के दान देते है। मगर कोइ मनुष्य दान लेकर उन का जीवहिंसा कुव्यसन विगेरह पाप में खर्चे करे, वैसे आदमी को दान देना सो कुपात्र दान है॥

५ गुणानुराग—दूसरे में गुण ढूंढना, गुणवान से प्रीति करना, गुणवाले से गुण लेना।

जो करने से गुणग्राहकता खीलती है, नम्रता आती है वैरवृत्ति शांत होती है, आत्मा का गुणभंडार खूलता है॥

६ आगमश्रवण—शास्त्रजी सूणना, स्वाध्याय करना।

जो करने से अज्ञान हठता है, हेय-ज्ञेय व उपादेय की पीछान होती है, विवेक बढता है, वीरतिपन प्राप्त होता है, कषाय छूटता है व केवलज्ञान की प्राप्ति होती है॥

—•—

ॐ

श्री सिद्धचक्रजी यंत्र

परिशिष्ट २

श्री नमस्कार मंत्र का अर्थ.

१ नमो अरिहंताणं ॥ अर्थ—श्री अरिहंत भगवान् को नमस्कार हो। जिस में ८ प्रातिहार्य और ४ अतिशय एवं १२ गुण है।

सो इस प्रकार—१ अशोकवृक्ष, २ सुरपुष्पवृष्टि, ३ दिव्यध्वनि, ४ चामर, ५ आसन, ६ भामंडल, ७ दुंदुभीनाद, ८ तिन छत्र, ९ अपायापगमातिशय, १० ज्ञानातिशय, ११ पूजातिशय, १२ वचनातिशय ॥

२ नमो सिद्धाणं ॥ अर्थ—श्री सिद्धभगवान को नमस्कार हो जिस में ८ कर्म के विनाश से ८ गुण है।

सो इस प्रकार—१ अनन्तज्ञान, २ अनन्तदर्शन, ३ अव्याबाधसुख, ४ अनंतचारित्र, ५ अक्षयस्थिति, ६ अरुपिपना, ७ अगुरुलघुत्व, ८ अनंतवीर्य ॥

३ नमो आयरियाणं ॥ अर्थ—श्री आचार्य भगवान् को नमस्कार हो। जिस में ३६ गुण है।

सो इस प्रकार—१–५ शरीर, जीभ, नाक, आंख व कान के विषय को रूके, ५ इंद्रिय को अपने आधीन रक्खे, ६–१४ नपुंसक व जनानावाला स्थान में रहना,

स्त्रीसे राग से बातचीत करना, जनाना की बेठक पर दो घडी के पहिला बेसना, जनाना के अंग-उपांग को राग से देखना, दिवाल के सहारे से ओर की कामक्रीडा सुणना-देखना, अपना पहिले का विषयभोगों का स्मरण करना, स्निग्ध (मादक) आहार लेना, अधिक भोजन करना, शरीर की शोभा को वढाना-इसी ९ दूषणो से रहित ब्रह्मवृति को धारण करे १५-१८ क्रोध, मान, माया व लोभ को दूर करे, १९-२३ हिंसा, जूठ, चोरी, अब्रह्म व परिग्रह (ममत्व) को छोड दे, ५ महाव्रत को धारण करे. २४-२८ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार व वीर्याचार को पाले. २९-३३ इर्यासमिति, भाषासमिति एषणासमिति, आदान-निक्षेपणासमिति व पारिष्ठापनिका समिति से वर्ताव करे, ३४-३६ मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति से रहे (श्री पंचिंदिय सूत्र में इसी गुणों का कथन है. देखिए पृष्ट ३९ का पाठ.)॥

४ नमो उवज्झायाणं ॥ अर्थ—श्री उपाध्यायजी महाराज को नमस्कार हो जिस मे २५ गुण है।

सो इस प्रकार-१-११ अग्यारह अंगशास्त्र के ज्ञाता हो, १२-२३ बारह उपांगशास्त्र के पाठी हो, २४-चरणसित्तरी को पाले, २५-करणसित्तरी को आचरे ॥

५ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ अर्थ—लोक मे सभी श्री साधुमहाराज को नमस्कार हो जिस में २७ गुण है।

सो इस प्रकार–१–६ हिंसा, जूठ, चोरी, अब्रह्म, परिग्रह व रात्रिभोजन न करे, ५ महाव्रत व ६ वां रात्रिभोजन त्यागव्रत को पाले, ७–१२ पृथ्वीकाय, जलकाय, तेजस्काय, वायुकाय, हरि (वनस्पति) काय व त्रसकायकी रक्षा करे, १३–१७ शरीर जीभ नाक आंख व कान को अपने काबू में रक्खे, १८–२२ संतोष क्षमा चित्त की निर्मलता प्रतिलेखना व संयमयोगप्रवृत्ति को धारन करे, २३–२५ अकुशल मन वाणी व शरीर को रूके, २६–परिषहों को सहे, २७–उपसर्ग को सहे ॥

एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥

अर्थ—यह पांचो ही नमस्कार सभी पापो का नाश करनेवाला है। उन पांचो पदों में अरिहंत भगवान् का १२ गुण सिद्ध भगवान् का ८ गुण, आचार्य महाराज का ३६ गुण, उपाध्याय महाराज का २५ गुण और साधु–मुनि महाराज का २७ गुण इसि प्रकार '१०८' गुण है। जिस का जाप करने से सभी पापो का नाश होता है, दुःख दरिद्रता रोग शोक भय उपद्रव अशांति व अनिष्ठ दूर होता है, इष्ट सिद्धि होती है, धर्म अर्थ काम की वृद्धि होती है और मोक्ष की प्राप्ति होवी है ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

अर्थ—यह नमस्कार सभी मंगलमें प्रथम मंगलरूप है। इस नमस्कार के जाप कर के जो कार्य किया जाय सो सिद्ध होता है।

श्री नमस्कार मंत्र का आदिम अक्षर लेनेसे " ॐ अ सि आ उ सा य नमः " मंत्र होता है, सोभी महान फलदायक है ॥

श्री नमस्कार मंत्र का आदिमाक्षरमंत्र (अ अ आ उ म्) को ही स्वरूपान्तर से जोडदेनेसे " ॐ " बनता है ॥

श्री नमस्कार मंत्र के ५ पदो में १०८ गुण होने से नवकारवाली (माला) का १०८ मनका (दाना) रक्खा जाता है ।

श्री नमस्कार मंत्र का अर्थ समाप्त ।

नरक का रास्ता

नर्क में जाने के लीए १ जुआ, २ मास, ३ शराब, ४ वेश्यागमन, ५ शिकार, ६ चोरी और ७ परस्त्रीगमन यह ७ रास्ता है जिन की ओर जाना नहीं चाहिए ॥

परिशिष्ट–३

जिनप्रतिमा विचार.

१–स्थानांगजी स्था० ५ उ० २ सूत्र ४२१ व भगवतीजी श० ८ उ० ८ सूत्र ३४० में आगम, सूत्र, आज्ञा, धारणा व जीत को व्यवहार माना है। तथा नंदीसूत्र स्थानागजी सू० ७९९ भगवतीजी श० २५ उ० ३ और समवायागजी सूत्र० १३६–१४८–१५७ में ८४ आगम, निर्युक्ति व संग्रहणी को प्रमाण माना है। उन के अनुसार चलनेवाला आराधक है.

२–समवायांगजी सूत्र–३४, जबूद्वीप प्रज्ञप्ति व० ५ सू० ११५, ज्ञाताजी अ० ८ व ज्ञाताजी २।१।१४८ से. नमुत्थुण पाठ, प्रणाम, समवसरण बनाना, छत्र, चामर पुष्पवृष्टि सुरभिवायु सूरभिपानी विगेरह अतिशयकरण करेना। इत्यादि वीतराग की भक्ति का अंग है। इस भक्ति करने में वीतरागकी वीतरागता नहीं चली जाती है।

३—ज्ञाताजी अ० ८, आचारांग अ० २४ सूत्र १२९–१७६. जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति व० ५ सूत्र ११२ से १२३, स्थानांगजी ४।३।३२४ से ३३८ भगवतीजी ३।१।१४२ से जन्म दीक्षा, ज्ञान व निर्वाण के निमित्त आना अभिषेक–पूजा करना उत्सव करना, यह भी जिनभक्ति का अंग है।

जंवूद्वीपप्रज्ञप्ति व० ५ सू० ११५ में जिनभक्ति के निमित्त देवो के आने की गवाही है॥

४—श्रीदेशवैकालिक सूत्र अ० १ गा० १ में " देवा वि " शब्द लीख कर देवो की बुद्धि को सर्वोच्च स्थान दीया है। देव तीर्थंकर की व साधुजी की सभी प्रकार से भक्ति करते है और आशातना दूर करते है।

आचारांगजी अ० २४ सूत्र १७६—१७९. स्थानांगजी ९।३।३९३, ४।३। ३२४—३३८, ३।१। १३३—१३४, समवायांग ३४—१५७।३५+ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ४।१०७, ५।११२ से १२३, २।२३. भगवतीजी ३।१। १४२, १०।५।४०५—४०६, ३।२ १४४, ज्ञाताजी ८। ६६—७६—७८. उत्तराध्ययनजी अ० १२ गा. ३२, में देवो सभी प्रकार से तीर्थंकर व साधुजी की भक्ति करत है और उपसर्ग आशातना दूर करते है॥

भगवतीजी श० १६ उ० २ व रायपसेणीजी में इंद्र को सम्यक्वादी कहा है। सभी इंद्र भव्य ही है। स्थानांगजी ३।३। १२८—१८५, १०।३। ७६० से देवो धर्मव्यवसायी सम्यक्त्वधर्मी श्रुतधर्मी सिद्ध है॥ प्रश्न व्याकरण द्वा० २ सू० २४ मे देवेन्द्र भाषितार्थ को प्रमाण कहा हे॥ देव सम्यक्त्व रूप से संवरी है॥ स्थानांगजी स्था० ४ उ० १ सूत्र २६७ से देवो सुगत है॥ इसिसे भगवान् महावीरने स्थानांगजी स्था० ९ उ० २ सू. ४२६ में फरमाया है कि—तप व ब्रह्मचर्य

से रहित देवो का अवर्णवाद बोलनेवाला दुर्लभबोधि है और उनका वर्णवाद (जिनभक्ति उत्सव विगेरेह की तारिफ) बोलनेवाले सुलभबोधि है ॥

५ श्री अनुयोग द्वार सूत्र व स्थानागंजी स्था० ४ उ०२ सूत्र ३०८ में नाम स्थापना द्रव्य और भाव इस प्रकार ४ निक्षेपा बतलाया है । तीर्थंकर में चार निक्षेपा इस प्रकार है। नाम–तीर्थंकर नाम, स्थापना–तीर्थंकर की प्रतिमा, द्रव्य–तीर्थंकर नामकर्म वेदे उन से पहिले का या पीछे का खूद तीर्थंकर, गृहस्थ साधु व निर्वाणप्राप्त तीर्थंकर शरीर, विगेरह, भाव–तीर्थंकर नामकर्म वेदनेवाला, तीर्थंकर ।। जीनका भाव निक्षेपा शुद्ध है उनका ४ निक्षेपा शुद्ध है, इस प्रकार तीर्थंकर का ४ निक्षेपा वंदनिक है पूजनिक है उपास्य है (उव० २७ ज्ञाता अ०८)। और जीनका भाव निक्षेपा अशुद्ध है उनका ४ निक्षेपा अशुद्ध है, इस प्रकार बौद्ध गौशाला व जमाली का ४ निक्षेपा अवंदनिक है अपूजनिक है×१

चारो निक्षेपा उत्तरोत्तर अधिक फलवाला है.

६—गाय (गैया) का नाम लेने से गाय की मूर्ति से बछरीसे या खूद गाय से दुध की प्राप्ति होती नहीं है, खूद गाय हो व

+ १. देखिए "गुरुतत्त्व विनिश्चय प्रकरण" ॥

अपना प्रयत्न हो तो दूध मीलता है। वैसे ही अरिहन्त का नाम से उनकी मूर्ति से उन का दीक्षोत्सव से या खुद अरिहन्त से अपने को अरिहन्तता आती नहिं है। मगर अपनी भाव क्रिया सें अरिहंतता आती है ॥ इसि से यह नहीं कहा जाय कि अरिहंत का नाम जाप व जिनमूर्तिपूजा फजुल है॥ क्यूंकि मनुष्य उन ४ निक्षेपा का निमित्त पाकर अरिहंत हो सकता है॥ इस प्रकार अरिहन्त का सीर्फ नाम लेने में महानलाभ माना है अरिहंत की स्थापना की उपासना में अधिक लाभ है और द्रव्य अरिहंत व भाव अरिहंत की भक्तिमें उन सें भी अधिकाअधिक लाभ है+

+ सीर्फ अरिहंत की भक्ति करे और अरिहतको धिक्कार हो कहे या अरिहंत की मूर्ति से द्वेष करे या जन्माभिषेक विगेरह को मिथ्यात्व माने उनको वडी आशातना लगती है.

कुन्दकुन्दाचार्य कृत चैत्यप्राभृत, नागसेन मुनिकृत तत्वानुशासन श्लो० ९९-१००-१०१-१३१, विद्यानन्दिकृत पात्र केसरि स्तोत्र श्लो० ३८, काष्ठासंघी आचार्य कृत ढाढसी गाथा १२,-१३, भ० इंद्रनंदिकृत नीतिसार श्लो० १४-४६, जिनसेनाचार्य कृत आदिनाथपुराण, जिनसेन सूरिकृत हरिवंश पुराण, गुणभद्रसूरिकृत महापुराण, विगेरह दिगंबरशास्त्रो में भी चैत्य जिन प्रतिमा पूजाविधि ४निक्षेपा तीर्थ व चैत्यविराधन की आलोयणा का अनेक पाठ है॥ यदि मूर्तिपूजा अर्वाचीन होती तो दिगंबर शास्त्र उन का अवश्य विरोध करते॥

७ उववाइजी सूत्र २७ उपासकजी सूत्र–३ भगवतीजी श० २ उ० ५ सू० १०९, श० ३ उ० १ सू० १३४, श० ६ उ० ३३ सू० ३८० व उत्तराध्ययन सूत्र अ० २९ सू० १४ में तीर्थंकर विगेरह का नाम उच्चार व सुवचन का महान् लफ बतलाया है (नाम)

८ स्थानांगजी ४–२–३०८ व १०–३–७४१ जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति व० ५ सूत्र ११७ व भगवतीजी १–१–२ में स्थापना–सत्य, जिनप्रतिमा व ज्ञानमूर्ति का प्रमाण है

९ जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति व० १ सू०१२–१३, व०४ सूत्र ७५–८०–८४ से १११ (सूत्र ८८), स्थानांगजी ४–२–३०७, भगवतीजी श० २० उ० ९ सूत्र ६८३–६८४ उववाइजी सूत्र–१–४०, रायपसेणीजी, जिवाभिगमविजयदेव अधिकार, उपासकजी अ० १. सूत्र. ८...अ० ७ सूत्र १९७, प्रश्न व्याकरण द्वा० ३ सूत्र २६ (४–५) ज्ञाताजी अ० १६ सू० ११९ भगवतीजी १०–५–४०५ । इत्यादि अनेक स्थान में सिद्धायतन जिनमंदिर जिनप्रतिमा व जिन पूजा का अधिकार है ॥

१० जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति व० २ सूत्र० ३३ मे चैत्य–स्तूप का पाठ है ।

११. जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति मे १८ कोडाकोडी सागरोपम पहेले की अशाश्वती पुष्करिणी होने का जिक्र है। इसि प्रकार प्राचिन अशाश्वती जिन प्रतिमाए भी मीलती है। अष्टापदजी का मंदिर मथुरा का स्तुप धर्मचक्र शंखेश्वरपार्श्वनाथ विशाला की मुनिसुव्रतस्वामीकी पादुका व मूर्ति केसरीयाजी माणिक्यस्वामी इत्यादि अनेक तीर्थस्थानो व प्रतिमाएं भ० महावीर स्वामी से पहिले की है। भद्रेश्वर मे वीर नि० सं० २३ की व अजमेर म्युजियम मे वीर नि० सं० ८४ की जिनमूर्ति है।

भगवतीजी २।१।९४, ३।२।१४३, २०।९।६८३-६८४ जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति २।३३, ५।१२३, स्थानांग ४।२। ३०७, ज्ञाताजी १६।१२९, ९।९९, ९६, ६१, १६।१३० ८।६४ अणुत्तरोववाइ सुत्र १२३, ज्ञाताजी ८-६६, ७७, ७८, ७८ '॥ इत्यादि सूत्रमें तीर्थ व तीर्थयात्राका जिक्र है॥

१२-श्री जिवाभिगम में जिनप्रतिमा के शरीर का वर्णन है

१३-उववाइजी सू० २७, ४०, रायपसेणीजी, जिवाभिगमविजयदेवाधिकार जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र-१२, १३ भगवतीजी सूत्र-१४२, १४४, ६८३, ६८४, ४०५, ४०६, ४०७, भगवतीजी: श० १५ ज्ञाताजी सू० ११९. उपासकजी सूत्र-१९७, ८, उत्तराध्ययन सूत्र अ० २९ सूत्र-१४

विगेरह में जिनप्रतिमाजी का वदन प्रणाम नमुत्थुणस्तव पूजा विगेरेह का विस्तृत विधान है.

१४–प्रश्न व्याकरण धर्मद्वार १ सूत्र २१ में अहिंसा की नामावली में यज्ञ ओर जिनपूजा को भी गीनाया है.

१५–उववाइजी सू० ११,–१८, ज्ञाताजी सूत्र २४–७५–७६–११७–११९–१४८, भगवतीजी २ । ५ । १०६, ६ । ३३ । ३०८. में वलिकर्म (जुपूजा) का पाठ है.

१६–ज्ञाताजी सूत्र–१२–२४–३६–४६ में इतर मद्दजब-वाले की लघुपूजा का प्रमाण है

१७–भगवतीजी ३ । १ । १३४ मे इशानेंद्र, ३ । १ । १९७ में चमरेंद्र. ज्ञाताजी १ । १३ । ९७ मे दर्दूरदेव २ । १ । १४८ मे कालीदेवी विगेरह देवीया का नाटक का पाठ है, जो भगवान की सामने किया गया है, भगवानने जिसकी मना नहीं की.

१८. जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति व० २ सू० ३३, ८ । ८८, समवा-यांग सूत्र–३५ रायपसेणीजी जिवाभिगम सूत्र और भगवतीजी श० १० उ० ६ सू० ४०१ से ४०७ में तीर्थंकर की दाढा हड्डी का भक्ति पूजा व अशातना त्याग का फरमान है । यह द्रव्य तीर्थंकर की पूजा मानी जाती है.

१९ भगवतीजी श० १ उ० १ सूत्र ३ में द्रव्यश्रुत को नमस्कार किया है।

२०—उत्तराध्ययन सूत्र अ० २६ गाथा ४१, बृहत्कल्पसूत्र प्रश्नव्याकरण धर्मद्वार—१ सूत्र—३६ भगवती २० । ९ । ६८३ ६८४, महानिशिथ अ० ६ में जैन साधु व पौषधधारी श्रावक को जिनदर्शन करने की आज्ञा है। जिनमदिर नहीं जानेवाले को प्रायश्चित्त फरमाया है।

२१—आगमशास्त्रों में जिनप्रतिमा से बहोत लाभ होने का प्रमाण है ॥ सूरियाभ ईशानेन्द्र व विजयदेव जिनप्रतिमा की पूजासे आराधक भवसिद्धिक परिमीतसंसारी व सुलभबोधी बने (रायपसेणी, भगवतीजी, जिवाभिगमसूत्र) ॥ हित श्रेय-सुख क्षमा ओर मोक्ष की प्राप्ति जिन प्रतिमा से है (रायपसेणी) चमरेंद्र अरिहंत चैत्य के सहारे से सौधर्म देवलोक में गये (भगवतीजी) आर्द्रकुमार को प्रतिबोध हुआ (सूयगडांग नीर्युक्ति) ॥ शय्यंभवसूरिने प्रतिबोध व चारित्र पाया ॥ नाग-केतु को केवल ज्ञान हुआ ॥ श्रीवज्रस्वामीने पुरी के बौद्धराजा को जैन बनाया ॥ श्रेणिक राजाने अविरति होने पर भी तीर्थं-कर गोत्र बांधा ॥ रावणने नृत्यपूजासे से तीर्थंकर नामकर्म बांधा ॥ सर्व विरति लेने में अशक्त श्रावक जिनमंदिर बनाकर

अच्युत (१२) देवलोक में जाते है (महानिशिथ) जिनपूजा अहिंसारूप ही है अर्थात्—श्रावकव्रत की पोषक है (प्रश्न व्याकरण) चैत्य की वैयावृत्य से कर्म की निर्जरा होती है (प्रश्न-व्याकरण) चैत्यस्तुति करने से ज्ञान दर्शन चारित्र सम्यक्त्व देवलोक व मोक्ष प्राप्त होते है (उत्तराध्ययन अ० २९ सू० १४)

२२—जो महजबवाले मूर्तिपूजा की मना करते है वो भी और और प्रकार से पत्थर चूना इंट व लकडी से बनाइ हुइ वस्तु को मानते है पूजते है ॥ स्थानकवासी जैन गुरुकी समाधि×गुरुकी फोटू पूज्यकीपाट ॐकारपट्ट नमस्कारपट्ट अनानूपूर्वी व गुरुजी के मूरदे को मानते है पूजते है ॥ तेरापंथी जैन गुरु की गद्दी को पूजते है पैर नहिं लगने दे ते है ॥ तारन पंथी दिगम्बर जैन शास्त्र को पूजते है ॥ आर्यसमाजी दयानन्द स्वामी का फोटू व यज्ञ-स्तंभ को मानते है पूजते है ॥ क्रिश्चियनो क्रोस (इशू का मृत्यु चिह्न) को मानते है पूजते है ॥ मुसलमान मसीद कब्र ताजिया व काबा पत्थर को मानते है—पूजते है ॥

२३—जिनागम में अजीव में भी जीव के प्रतिस्पार्धिरूप

× अंबाला व बडोद (मेरठ) विगेरे स्थानो में उनकी गुरु समाधि है जहां धूप पुष्प पूजा होती है.

महान शक्ति मानी है। लेश्या कर्म विगेरहका अचिन्त्य प्रभाव है॥ श्री दशवैकालिकजी में स्त्रीचित्र को दोषोत्पादक बतलाया है। छेदसूत्र में केला को विकार हेतु मान कर आर्जा को लेने की मना की है॥ रजोहरण व साधुवेष से मनुष्य पूजनिक होता है।

२४—मनुष्य जीवन में भी निर्जीववस्तुए बडी आवश्यक व जीवनको असर करनेवाली मानी जाती है॥ रुपैया नोट हुंडी सूंना जवाहर विगेर के पीछे आदमी का जान का खतरा है॥ ब्राह्मी व शांखिया जीवन को अमरता व मृत्यु देते है॥ तार टेलीफोन वायर्लेस का अजीव शब्द सजीव की ताकात रखते है॥ सीनेमा की निर्जीव पूतलीयां मनुष्य को चकाचौंध कर देते है॥ राष्ट्रध्वज में सारा राष्ट्र के जीवन मरण की समस्या है।

२५—इस प्रकार जिनप्रतिमा सिद्धि में अनेक प्रमाण पाठ है.

जिनप्रतिमा विचार समाप्त.

परिशिष्ट ४

सूतक विचार.

जन्म सूतक.

१—प्रसूता स्त्री को १२ दिन कीसी को भी छूना त्याग, दूसरे को अपना बच्चा छूलाने का त्याग। ३० दिन तक जिनदर्शन त्याग। ४० दिन तक अंगपूजा व अपने हाथ से साधु को दान देने का त्याग॥

२—दिन में पुत्र जन्मे तो १० दिन, पुत्री जन्मे तो ११ दिन और रात्रि को पुत्र-पुत्री जन्मे तो १२ दिन सूतक॥ उन घर में रहनेवाला सूनेवाला व जीमनेवाला को १२ दिन तक पूजा व साधुदान त्याग। यदि कोइ श्रावक दुसरे के घर में खाने का, सूने का, पीने का रक्खे सो दुसरे के घर के पानी से व आगि से जिनपूजा, धर्मध्यान कर सके॥

३—जन्म के स्थान में ४० दिन का सूतक॥

४—प्रसूता से सम्बन्ध रखनेवाला, छूनेवाला, साथ में खानेवाला, रहनेवाला व सुवावड करनेवाला श्रावक-श्राविका को १२ दिन का सूतक।

५—गोत्रीज (कुणबा) को ५ दिन का सूतक॥

६—शेठ का दीया हुआ अलायदा घर में रहनेवाले जन्म से दास-वृत्तिवाले दास-दासी माना जाता है। दासी प्रसूता बने तो शेठ को ३ दिन का सूतक। दासी की पास १२ दिनतक घर का बाह्य काम जाडू विगेरे कराना त्याग। ३० दिन तक घर के भीतर का काम कराना त्याग॥

७—प्रसूता या प्रसूता की सूवावड करनेवाले, तनख्वाही नोकर-नोकरन से ३० दिनतक घर का काम कराना नहीं॥

८—मवेसी घर में प्रसूता बने तो दुसरे दिन सूतक उतर जाय। मगर जंगल में ही मल (जर) छोडकर आवे तो उन दिन का ही सूतक ॥ भेंस का १५ दिन, ऊंटनी व गैया का १० दिन, तथा बक्री व गडरी (भेडी) का ८ दिन तक दूध अभक्ष्य है ॥

मृत्यु सूतक.

१—मृत्यु हुआ हो उन घर में रहनेवाला व उन घर में खानेवाला को १२ दिन का सूतक ॥

२—गोत्रीज (कुणबा) को ५ दिन का सूतक ॥

३—मुरदा की पाश सूनेवाले (रात को रक्षण करनेवाले) व नत्थी उठानेवाले (कांध देनेवाले) को ३ दिन का सूतक ॥

४—सीर्फ व्यवहाररीतिसे ही साथ में स्मशान जानेवाला सूतक-वाले से संघट्ट करे तो १ दिन (८ पहर) का सूतक ॥

५—न मुरदा को छुवे, न छूतछात करे, उन को सवाग स्नान करे वहां तक सूतक ॥

मुरदे का खुल्ला मुख देखने से भी स्नान करने की प्रवृत्ति है ॥

६—८ वर्ष से छोटा बच्चा मरे तो ८ दिन का सूतक ॥

(विचारसार प्रकरण)

७—जितना माहिना का गर्भ गीरे वहां इतना दीन का सूतक ॥

८—दास दासी का शेठ के मकान में मृत्यु हो तो शेठ को ३ दिन का सूतक ॥

९—परदेश से मृत्यु का तार, चिठ्ठि, समाचार आवे, जन्म के दिन

मृत्यु हो, अपने घर में जैन साधु या सन्यासी का मृत्यु हो तो १ दिन का सूतक ॥ कोइ स्थान में परदेश का मृत्युसमाचार से २ दिन सूतक लीखा है ॥ साधुजी की पालकी उठाने में–छूने में सूतक नहीं है ॥

१०—मृत्यु वाली भूमि में १२ दिन का सूतक ॥

११—भगिनी व पुत्री के घर का विगोत्री होने से सूतक नहीं है॥

१२—मवेसी मरे तो उन का मुरदा नीकाल दिया जाय वोहि दिन का सूतक ॥

१३—और पंचेन्द्रिय तिर्यंच का मुरदा हो वहा तक सूतक ॥

सूतक में प्रवृत्ति.

१—सूतकवाला देव गुरु व ज्ञान के उपकरण को छुवे नहीं, उची आवाज से धर्म पाठ वोले नहीं, जिनपूजा, गुरुदान करे नहीं ॥

२—दूरसे प्रभुदर्शन गुरुदर्शन करे। मन में नमस्कार मंत्र का जाप करे। मन में सामायिक प्रतिक्रमण करे–सूने ॥

३—सूतकी घर दुगंछनिक है (निशिथजी उ० १६) उन घर का पानी व आगि जिनपूजा के काम में नहीं लाना ॥ साधु को दान नहीं देना ॥ (निशिथचूर्णि)

४—सूतकी भूमि में देव, गुरु व ज्ञान को लेजाना नहीं, उन के उपकरण रखना नहीं व धर्म उच्छव करना नहीं ॥

ऋतुवंती विचार.

१—ऋतुवंती स्त्री दिन ३ (प्रहर २४) तक देव, गुरु, ज्ञान के

उपकरण, अनाज, वर्तन व घर की चीजो कों छुए नहीं । जिनदर्शन विगेरह त्याग ॥ मन में नमस्कार मंत्र का जाप व तपस्या कर सके ॥

२—दिन ३ (प्रहर २४) के वाद जिनदर्शन, अग्रपूजा, भावपूजा, गुरुवंदन, व्याख्यानश्रवण, सामायिक व प्रतिक्रमण कर सके ॥ सीर्फ जिनपूजा (अंगपूजा) करे नहीं ॥

३—दिन ३ के वाद भी ऋतु हो तो विवेक से स्नान कर के गुरु-वदन विगेरह विधि करे । सीर्फ जिनपूजा न करे ॥

४—दिन ७ तक जिनपूजा (अंगपूजा) न करे । आठवें दिन पूजा करे ॥

इति सूतकविचार समाप्त.